ओ३म्

राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा

ऋषि दयानन्द

तिथि–10 फरवरी 2017
सृष्टि संवत्- १, ९६, ०८, ५३, ११७
युगाब्द-५११७, अंक-८२, वर्ष-९
फाल्गुन मास, विक्रमी २०७३ (फर. 2017)
मुख्य संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य'
कार्यकारी संपादक : आचार्य सतीश
सम्पर्क सूत्र: 9350945482
Web: www.aryanirmatrisabha.com
E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

अग्निना रयिमश्नवत्पोषमेव दिवेदिवे। यशसं वीरवत्तमम् ॥ -ऋ०१। १। १। ३

व्याख्यान-(अग्निना) हे महादातः ईश्वराग्ने! आपकी कृपा से स्तुति करनेवाला मनुष्य (रयिम्) उस विद्यादि धन तथा सुवर्णादि धन को (अश्नवत्) अवश्य प्राप्त होता है, कि जो धन (दिवे दिवे) प्रतिदिन (पोषमेव) महापुष्टि करने (यशसम्) और सत्कीर्ति को बढ़ानेवाला, तथा (वीरवत्तमम्) जिससे विद्या, शौर्य, धैर्य, चातुर्य, बल-पराक्रम और दृढ़ाङ्ग धर्मात्मा, न्याययुक्त, अत्यन्त वीर पुरुष प्राप्त हों, वैसे सुवर्ण रत्नादि तथा चक्रवर्त्ती राज्य और विज्ञानस्वरूप धन को प्राप्त होऊँ। तथा आपकी कृपा से सदैव धर्मात्मा होके अत्यन्त सुखी रहूँ।

सम्पादकीय

लालच की ओर अग्रसर प्रजातन्त्र

प्रजातन्त्र शब्द का अर्थ है- प्रजा द्वारा बनाया गया, चुना गया तन्त्र अर्थात् व्यवस्था। इसमें पहला शब्द है-प्रजा, और प्रजा कहते हैं- प्रकृष्ट रूप से उत्पन्न एवं उन्नतिशील जन-जन को। यहाँ ध्यान देने योग्य शब्द प्रकृष्ट है, इसे और भी खोलकर देखा जाय तो अत्यन्त उत्कृष्ट जीवन मूल्यों से ओतप्रोत जन समूह ही प्रजा होती है, जिनमें स्वात्म विवेचन से लेकर परमात्म विवेचन तक का सामर्थ्य हो अर्थात् जो गुण-कर्म-स्वभाव से आर्य हो। तब उन आर्यों के द्वारा "इन्द्रवर्धन्तो अप्तुरः" इस वेदमन्त्रभाग के आधार पर अपने में से श्रेष्ठतम प्रतिनिधिभूत व्यक्तियों का चयन कर शासन संभालने हेतु नियुक्त किया जाय तब उस तन्त्र को, व्यवस्था को आप प्रजातन्त्र कह सकते हैं। होता ही वही है-प्रजातन्त्र।

वर्तमान विश्व धरातल पर ऐसा प्रजातन्त्र कहीं नहीं है, ज्ञान की आदि धरा आर्यावर्त्त (भारत) से लेकर अमेरिका (पातालभूमि) तक जो तन्त्र (व्यवस्था) है, यह स्वार्थपरक, लोभाभिभूत, धनबलादि से, छल-कपटपूर्ण व्यवहार पूर्वक प्राप्त किया जाता है। इसके लिए 'आत्म स्तुति' जितनी परमावश्यक बना दी गई है, उससे कहीं अधिक परमावश्यक हो गयी है-परनिन्दा। और इसी के साथ जितनी अतिशयोक्तिपूर्ण, अतिरंजनापूर्ण अभिव्यक्ति हो, जितना अधिक महिमामण्डित दीर्घकालिक प्रचार हो उतनी ही सफलता सुनिश्चित है।

आर्यो/आर्याओ! वर्तमान में हमारे देश के कुछ सीमांत राज्यों में निर्वाचन हो रहा है, उत्तराखण्ड चीन सीमा से लगा हुआ संवेदनशील राज्य है, उत्तर प्रदेश भी नेपाल की सीमा से लगा हुआ है, तो पंजाब पाकिस्तानी सीमा पर है, गोवा समुन्द्री सीमा पर है, तो छोटा सा राज्य मणिपुर पुनः चीन की सीमा पर स्थित है। इन पाँच राज्यों के चुनाव को २०१९ के लोकसभा निर्वाचन के रूप में परिभाषित किया जा रहा है। राज्यों के अनुसार हमारे खेवनहार राजनैतिक दलों ने 'घोषणा पत्र' नहीं 'लालच पत्रों' का पुलिन्दा देश की जनता के सामने उन-उन के द्वारा खोल दिया गया है। तनिक कुछ पर दृष्टिपात तो कर ही लीजिए-

आम आदमी पार्टी (पंजाब) 1. पाँच रुपये में खाना दिया जाएगा। 2. आठवीं कक्षा तक छात्रों को फ्री लैपटॉप दिये जायेंगे। 3. बिजली बिल में छूट। 4. पत्रकारों को पेन्शन।

अकालीदल व भाजपा (पंजाब) 1. कारोबारियों को 2 करोड़ रुपये तक टर्नओवर पर कोई हिसाब-किताब रखने की जरूरत नहीं होगी। 2. 10 घन्टे मुफ्त बिजली। 3. नीला कार्ड धारकों को 25 रुपये किलो की दर से देशी घी, 10 रुपये किलो की दर से चीनी मिलेगी। 4. आर्थिक तौर पर पिछड़ों को मुफ्त बिजली। 5. शगुन स्कीम में मिलने वाली राशि 15000 रुपये से 51000 हजार रुपये होगी।

शेष अगले पृष्ठ पर

संपादकीय का शेष...

समाजवादी पार्टी व कांग्रेस (उत्तर प्रदेश) 1. फ्री स्मार्ट फोन 2. गरीब महिलाओं को प्रेशरकुक्कर। 3. मजदूरों को रियायती दर पर मिड डे मील। 4.महिलाओं को रोड़वेज में आधा किराया। 5. कुपोषित बच्चों को 1 कि.ग्रा घी, 1 किलो मिल्क पाउडर।

क्या इसी को प्रजातन्त्र अथवा लोकतन्त्र कहेंगे? यदि हाँ तो ऐसे घोषणा पत्र तो हमने और आपने प्राथमिक विद्यालयों में खूब बनाये हैं, तुम मुझे रबर दो मैं तुम्हें केला दूंगा, तुम मुझे पेन्सिल दो मैं तुम्हें समोसा दूंगा आदि आदि। इस तर्ज पर ही तुम हमें वोट दो हम तुम्हें मिड डे मील, घी, दूध पाउडर, पाँच रुपये में खाना आदि आदि...!

पाठकों! विचारकों ! किंचित् चिन्तन कीजिए! क्या इसी को राजनीति कहते हैं? क्या यह राज्यों का और देश का हित करने वाली घोषणाएं हैं? क्या ऐसी घोषणा करने वाले राजनैतिक दलों के लिए मतदान करना चाहिए? क्या यह मत 'दान' कहलाएगा? अथवा भविष्य में ये राजनैतिक दल यह कहते हुए मिलेंगे कि- आदरणीय बन्धुओं! मत खरीद के दिन, मतखरीद केन्द्र पर पहुँचकर.... चुनाव चिन्ह पर बटन दबाकर अपने लिए एक कार पक्की कर लें!

'राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा' के माननीय अध्यक्ष आर्य बलेश्वर जी ने यू ट्यूब पर डाले गये अपने सन्देश में यह चिन्ता व्यक्त की है, वे अत्यन्त धन्यवाद के पात्र हैं, जो एक समसामयिक विषय को हम सबके ही ध्यान में नहीं लाये अपितु पूरे देश के देशभक्त बुद्धिजीवियों के मध्य सामाजिक जनसंचार माध्यम (सोसियल मिडिया) से रखा है। वास्तव में ऐसे बिन्दुओं पर जो भविष्य के लिए अत्यन्त हानिकारक ही नहीं अपितु विनाशकारी सिद्ध होने वाले हैं, एक आर्य (श्रेष्ठ) ही विचार कर सकता है, और आर्यों को विचार करना ही चाहिए। मान लीजिए कि दस-पन्द्रह वर्षों तक सभी निवार्चन दलों में यही प्रलोभन देने की प्रतिस्पर्धा परम्परा बन चल पड़ी और चलेगी, तो तब कोई नया नेता अत्याधिक लालच देकर विजय प्राप्त कर ले और वह नया नेता आजमखान हो? ओवैसी हो? नसीमुद्दीन सिद्दिकी हो? या कोई भिण्डरावाला हो? तो सोचिये क्या होगा? क्या परिणाम आयेंगे।

हमारे देश के उच्चतम न्यायालय ने राजनैतिक दलों को निर्देशित किया कि- धर्म और जाति के नाम से चुनाव न लड़ें। लेकिन क्या यह भी उच्चतम न्यायालय ही बताएगा कि 'लालच' देकर चुनाव न लड़ें? चुनाव लोकहित के लिए लड़े जाते हैं। घोषणापत्रों में लोकहित की घोषणा भी होती है, किन्तु घोषणा में लोकहित की सीमा लांघकर कहाँ परिवार हित और व्यक्तिहित जोड़ दिया गया, इसका विशलेषण करना सामान्य जनता के वश की बात तो है ही नहीं, वे तो यही सोचते हैं कि हमारे हित में ही राज्यहित है, देशहित है। जबकि सिद्धान्त यह है कि राष्ट्र हित में ही व्यक्तिगत हित सम्मिलित है। पहले यह लालच छुपे रूपों में होता था। किन्तु जब से दक्षिण भारत के राजनैतिक परिदृश्य में नट-नटियों (एन.टी. रामराव, जे. जयललिता आदि) का पदार्पण हुआ, तब से खुले रूप में पहले दक्षिण भारत में और अब उत्तर भारत में यह 'लालचतन्त्र' फैलता ही चला गया। अतः 'आर्य क्षत्रिय सभा' के अध्यक्ष महोदय के वक्तव्य के अनुसार हम सभी को अपने ग्राम, नगर में लोगों के बीच इस 'लालचतन्त्र' पर जन-जन से चर्चा करनी चाहिए! जन-जन के नकारात्मक एवं सकारात्मक विचारों को जानना चाहिए। 'दलों के पक्षपात रहित तटस्थ सोच' आर्यों की होनी ही चाहिए। इस राजनैतिक दल-दल में से जो अपेक्षाकृत ठीक हैं उसे चुनना एक अलग विषय है, चुनना भी चाहिए! लेकिन विचार- विमर्श के काल में बिना प्रभावित हुए सोचना विचारना, समाज के सम्मुख स्पष्ट विचारों को प्रकट करना आवश्यक है। व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र के हित में है। अतः आइए इस 'लालचतन्त्र' की मीमांसा कीजिए, हानि-लाभ को समझिए और जनता को समझाइए।

-आचार्य हनुमत्प्रसाद

आगामी आर्य प्रशिक्षण सत्रों की सूचना

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आर्य विद्या देने हेतू द्विदिवसीय सत्रों का आयोजन प्रतिमाह अनेक स्थानों पर हो रहा है। सत्रों की जानकारी समय पर सभी को मिल सके इसके लिए आगामी सत्रों की सूचना, जो अब तक निश्चित हो चुके हैं, दी जा रही है। इसके अलावा भी कई सत्र जो बाद में निश्चित होते हैं उन की सूचना अन्य माध्यमों से आर्यों को भेज दी जाती है। सभी आर्यों से यह भी निवेदन है कि सत्रों की तिथियाँ समय पर निर्धारित कर अधिकारियों से अनुमति ले लेवें।

क्र.सं.		स्थान	दिनांक	सम्पर्कदूरभाष
1.	सैनी धर्मशाला, सफीदों बाईपास, जीन्द, हरियाणा	11-12 फरवरी	आर्य सुरेन्द्र, आर्य सन्दीप	7404346740,9812492102
2.	आर्य समाज करनाल रोड़, कैथल, हरियाणा	11-12 फरवरी	आर्य सुरेन्द्र, आर्य अमनदीप	9813817610,7876854056
3.	गाँव वुवका, रादौर, यमुना नगर, हरियाणा	11-12 फरवरी	आर्य राजेन्द्र, राम कुमार	9991959063,8930144510
			आर्य देवीलाल	9813117794
4.	ओम् काम्पलेक्स, नजदीक तोशाम चुंगी, हिसार, हरियाणा (महिला सत्र)	11-12 फरवरी	आचार्य हरपाल	9467843826
5.	आर्य समाज भवन, गंज सिहोर, मध्य प्रदेश	18-19 फरवरी	आर्य ऋतेश (मंत्री)	9827068180,
			आर्य वेदप्रकाश, आर्य बाबूदास	751023076,9425015862
6.	आर्ष गुरुकुल चरथावल, मुजफ्फर नगर, (उ.प्र.)	18-19 फरवरी	आर्य तोषण, आर्य आकाश	9997140363,9808005005

आर्य सिद्धान्त

आश्रम अर्थात् कोई स्थान नहीं अपितु आयु का एक भाग जिसमें अत्यन्त परिश्रम करके उत्तम गुणों का ग्रहण और श्रेष्ठ काम किये जायें।

सिद्धान्त संगोष्ठी के निर्णय

-आचार्य जितेन्द्र
(महासचिव, राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा)

विद्वत् जन बताते हैं कि यदि हम खरबों को खरबों से गुणा कर दें तो जितनी संख्या का गणित निकलेगा सम्भवतः उससे भी अधिक जीव इस धरती पर बसते हैं। और इसमें स्थावर योनियों अर्थात् पेड़-पौधे, वनस्पतियों आदि को भी गिन लें तो इनकी संख्या की गिनती बहुत कठिन हो जाती है। इतनी अधिक संख्या के जीव-जन्तुओं में से केवल सात अरब को ही वर्तमान में मनुष्य शरीर मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

इससे यह समझना सरल है कि यह मनुष्य शरीर अत्यन्त दुर्लभ है। यदि **मननात् मनुष्यः** की परिभाषा को ध्यान में रखें तो इस मनुष्य शरीर में कितने जीव बुद्धि का प्रयोग ठीक से कर पाते हैं? इसका प्रतिशत तो जनसंख्या में और भी बहुत कम है। इन बुद्धिमान मनुष्यों में भी वेद मार्ग पर चलने वालों की संख्या कितनी अल्प होगी इसकी कल्पना आज की सामाजिक परिस्थितियों को देखकर करना अधिक जटिल नहीं है। इन सब बातों का विस्तार करने का प्रयोजन है कि यह सहजता से हम समझ सकें कि वेद धर्म का पथ सुगम नहीं अपितु तलवार की धार पर चलने के समान अति कठिन हो चुका है।

फिर क्या इस मार्ग को छोड़ दिया जाय? सामान्य व्यक्ति तो इस सब को जानकर हताश-निराश हो सकता है, परन्तु प्रत्येक आर्य जन को यह आवश्यक जानकारी होना चाहिए कि यही वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, और बिना सत्य विद्या के ना जीवनयापन ठीक से हो सकता है ना जीवन सुरक्षा और ना जीवन लक्ष्य की प्राप्ति हो सकती है। यानि मनुष्य जन्म की सफलता वेद विद्या के बिना सम्भव ही नहीं है। ईश्वर भी आदेश देते हैं कि **'नान्यः पंथा विद्यतेऽयनाय'**।

ऋषि मनु तो स्पष्ट घोषणा करते हैं **'यथा काष्ठ मयो हस्ति...'** कि वेदविद्या को प्राप्त किए बिना कोई भी जन सच्चा मनुष्य कहलाने का अधिकारी ही नहीं होता, चाहे परोपकार करना हो या स्व-गुण, कर्म, स्वभावों में उच्चता तक पहुँचना हो या फिर शरीरिक-आत्मिक-सामाजिक उन्नत्ति करनी-करानी हो। इसी वेद विद्या के अभाव में हमारा महान राष्ट्र मलेच्छों के पराधीन हो गया और आज इसी कारण से सारे विश्व में ईर्ष्या, द्वेष, अशान्ति, लड़ाई-झगड़ा, स्वार्थ, पाखण्ड, आडम्बर आदि अपना साम्राज्य स्थपित किए हुए हैं। ऋषि दयानन्द ने करहाती मानव जाति के पुर्नउद्धार की औषधि इसी वेदविद्या को ही सिद्ध किया और इसी के प्रचार प्रसार में अपना पूरा जीवन आहूत कर दिया। इस अनुपम विद्या को जन-जन तक सतत् रूप से पहुँचाने के लिए देव दयानन्द ने आर्य समाज नामक महान संस्था की स्थापना की तथा जिन दस नियमों से इस आर्यसमाज की आधारशीला रखी वह नियमावली भी वेद द्वारा निर्देशित है। यद्यपि यह समझना कठिन नहीं कि आर्यसमाज की आत्मा ही वेदविद्या है। स्वामी श्रद्धानन्द, प्रो॰ गुरुदत्त विद्यार्थी, पं॰ लेखराम आदि आदि सहस्त्रों आर्य विद्वानों ने इसी वेदविद्या रूपी मानवता की जड़ को सींचने में अपने रक्त की एक-एक बूंद न्यौछावर की है। अर्थात् यह अति स्पष्ट है कि प्रत्येक आर्यजन को वेदविद्या को पढ़ना-पढ़ाना व सुनना-सुनाना परम धर्म क्यों कहा गया है?

परन्तु वह संस्था आर्यसमाज जिसकी रग-रग में ईश्वर का संविधान-वेद बसा हुआ हो, दुर्भाग्य है कि आज उस संस्था की समाज में कोई विशेष पहचान ही नहीं है। ना आज इस संस्था की समाज में कोई सत्ता है, न जनता या प्रशासन इसके प्रभाव को मानता है। गम्भीरता पूर्वक कारण खोजने पर इस कड़वी सच्चाई को हमको स्वीकार करना चाहिए व इसके कारण खोजने चाहिएं।

जन-जन के सौभाग्य से साङ्गोपांग वेदविद्या के महापण्डित तथा आर्यसमाज के शीर्ष विद्वान आचार्य परमदेव जी मीमांसक ने इस पवित्र संस्था की अवनति के मुख्य कारण को पहचाना और आज से लगभग 12-13 वर्ष पूर्व इस वेदविद्या के सिद्धन्तों के प्रचार-प्रसार के लिए एक पाठ्यक्रम तैयार कर अल्पकालिक सत्रों की योजना को क्रियान्वित किया, जिसके कारण आर्यसमाज और मानव के कल्याण का पुनर्जागरण होता दिख रहा है। उन्हीं के आर्शीवाद से आज राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा नामक संगठन आर्य समाज के तीसरे नियम का पालन करने कराने में संलग्न है। इन्ही सत्रों के माध्यम से वेदविद्या के सम्बन्ध में जो भ्रान्तियां समाज में व्याप्त हैं जिनके समाधान पौराणिक समाज के पास तो हैं ही नहीं बल्कि उन भ्रान्तियों के कारण कुटिल सम्प्रदायवादी खिलाड़ी साधारण भारतीय जनता को अविद्या पाखण्ड की गहरी खाई में धकेलते जा रहे हैं, उन भ्रान्तियों के तर्कसंगत तथा सप्रमाण निराकरण के लिए माघ कृ॰ द्वितीया व तृतीया कलियुगाब्द ५११७ (14-15 जनवरी 2017) को आचार्य गुरूकुल महाविद्यालय में एक सिद्धान्त संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें लगभग 40 विद्वानों ने भाग लेकर निम्न प्रश्नों पर वादप्रतिवाद के द्वारा सत्य उत्तरों को खोजा। वेद सम्बन्धित प्रश्न तथा उनसे सम्बन्धित पारित प्रस्ताव निम्न थे-

प्रश्न १. वेद एक शाखा ग्रन्थ है अथवा संहिता है?

प्रस्ताव-१. चारों वेद संहिता हैं। वर्तमान में ऋग्वेद की शाकल शाखा, यजुर्वेद की माध्यन्दिन शाखा, सामवेद को कौथुमी शाखा व अथर्ववेद की शौनक शाखाएं मूल के सर्वाधिक निकट हैं। इनमें आरम्भ से अद्यावधि तक कोई परिवर्तन नहीं हुआ है और न ही भविष्य में इसकी कोई सम्भावना है। इनके संहिता पाठ (शाखा पाठ), पदक्रम एवं अष्टविकृति छन्दोबद्ध, कण्ठस्थिकरण की परम्परा तथा सर्वानुक्रमणि, प्रातिशाख्य आदि के कारण इनके स्वर, वर्ण, पद, छन्द, आनुपूर्वि सहित सुरक्षित हैं। शाखा ग्रन्थ व्याख्यान एवं यज्ञों के विनियोग की दृष्टि से ऋषियों ने बनाए हैं।

प्रश्न २. प्रत्येक वेद में मन्त्र संख्या कितनी है?

प्रस्ताव- २. ऋग्वेद में मन्त्र संख्या १०५८९, यजुर्वेद में १९७५, सामवेद में १८९५ तथा अथर्ववेद में ५९७७ ही निश्चित हैं। जो ऋषि दयानन्द द्वारा स्वीकृत तथा सर्वानुक्रमणि भी इसका अनुमोदन करती है। सिद्धान्त संगोष्ठी में उपस्थित विद्वत्जनों ने इसी को ठीक पाया और यही मान्य है।

प्रश्न ३. प्रतीकों को मन्त्र माना जावें अथवा नहीं?

प्रस्ताव-३. प्रतीक मन्त्र भाग नही हैं। वे मन्त्रार्थ को समझने की दृष्टि से उन-उन मन्त्रों के साथ धरे गए हैं।

प्रश्न ४. वेद तीन हैं अथवा चार हैं?

प्रस्ताव-४. वेद चार ही हैं जोकि ज्ञान,कर्म, उपासना तथा विज्ञान के विषयानुसार हैं। साहित्य विधा की दृष्टि से ऋक्, गीति और यजु (गद्य) तीन ही प्रकार से माने जाते हैं, इसी के लिए वेद त्रयी शब्द का प्रयोग हुआ।

प्रश्न ५. क्या वेद में एकश्रुति उच्चारण मान्य है अथवा सस्वर उच्चारण मान्य

शेष अगले पृष्ठ पर

पिछले पृष्ठ का शेष...

है?

प्रस्ताव-५. केवल यज्ञ कर्म में ही एक श्रुति का विधान है। यज्ञान्तर में सस्वर (त्रैस्वर्योपनयेन) मन्त्रोच्चारण ही साधु है। अत: हमें सन्तानों को व स्वयं सस्वर उच्चारण सिखाना वा सीखना चाहिए।

प्रश्न ६. क्या वेद का कोई स्वरूप है?

प्रस्ताव-६. जैसा कि वेद मन्दिर आदि के नाम से अथवा कुछ संहिता पुस्तकों में वेद का पशु मुखाकृति स्वरूप बनाया गया है वह अत्यन्त निन्दनीय है क्योंकि वेदों का ऐसा कोई स्वरूप नहीं है, क्योंकि वेद अर्थात् ज्ञान है।

प्रश्न ७. वेदार्थ कौन सा मान्य है? किस प्रकार के विद्वान का वेदार्थ मान्य होना चाहिए? वेदार्थ करने का अधिकार किसको है? वेदार्थ की व्याख्या किस की मान्य हो?

प्रस्ताव-७. वेदार्थ ऋषियों का ही मान्य है। वर्तमान में ऋषि दयानन्द कृत भाष्य ही सुलभ है। अन्य विद्वानों के वेदार्थ सर्वांश में मान्य नहीं है। परन्तु समझने में इनसे सहायता ले सकते हैं। वेदार्थ की व्याख्या करने का अधिकार प्रत्येक विवेकशील, बुद्धिमान अर्थात् आर्य को है। तथापि मन्त्र के शब्दों का नया अर्थ ऋषि भाष्य से इतर कल्पित करने का अधिकार नहीं है अर्थात् खीच-तान करने की छूट नहीं है।

प्रश्न ८. क्या अथर्ववेद में जादू-टोना-तन्त्र-मंत्र है?

प्रस्ताव-८ अथर्ववेद में जादू-टोना, तन्त्र-मन्त्र, मारक-मोहन, उच्चाटन आदि नहीं है। यदि कोई अथर्ववेद के नाम से ऐसा अन्धविश्वास, भ्रम फैलाता पाया गया तो राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा से उसे ऐसा करने से यथा सम्भव रोकने की अनुशंसा की गई।

प्रश्न ९. क्या प्रत्येक आर्य को वेद अपने घर पर रखना चाहिए? किस प्रकाशन का वेद ठीक है?

प्रस्ताव-९. प्रत्येक आर्य परिवार में वेद अवश्य चाहिएं।

प्रश्न १०. वेद के स्वाध्याय की रीति क्या है?

प्रस्ताव-१० अर्थसहित- श्रवण, मनन, निदिध्यासन और सक्षात्कार अर्थात् अर्थ ज्ञान की रीति से स्वाध्याय करना चाहिए, केवल पाठयाद को स्वाध्याय नहीं कह सकते हैं।

फाल्गुन मास का तिथि पत्र

11 फरवरी- 12 मार्च-2017 **फाल्गुन** ऋतु- शिशिर

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
					आश्लेषा 11 फरवरी	मघा कृष्ण प्रतिपदा 12 फरवरी
पू॰ फाल्गुनी कृष्ण प्रतिपदा 13 फरवरी	उ॰ फाल्गुनी कृष्ण द्वितीया 14 फरवरी	हस्त कृष्ण तृतीया 15 फरवरी	चित्रा कृष्ण चतुर्थी 16 फरवरी	स्वाती कृष्ण पंचमी 17 फरवरी	विशाखा कृष्ण षष्ठी 18 फरवरी	अनुराधा कृष्ण सप्तमी 19 फरवरी
ज्येष्ठा कृष्ण अष्टमी 20 फरवरी	मूल कृष्ण नवमी 21 फरवरी	पूर्वाषाढ़ा कृष्ण दशमी 22 फरवरी	उत्तराषाढ़ा कृष्ण एकादशी 23 फरवरी	श्रवण कृष्ण द्वादशी 24 फरवरी	श्रवण कृष्ण त्रयोदशी 25 फरवरी	धनिष्ठा/शतभिषा कृष्ण चतुर्दशी 26 फरवरी
पूर्वाभाद्रपदा कृष्ण अमावस्या 27 फरवरी	उत्तराभाद्रपदा शुक्ल प्रतिपदा 28 फरवरी	रेवती शुक्ल द्वितीया 1 मार्च	अश्विनी शुक्ल तृतीया 2 मार्च	भरणी शुक्ल चतुर्थी/पंचमी 3 मार्च	कृतिका शुक्ल षष्ठी/सप्तमी 4 मार्च	रोहिणी शुक्ल अष्टमी 5 मार्च
मृगशिरा शुक्ल नवमी 6 मार्च	आर्द्रा शुक्ल दशमी 7 मार्च	पुनर्वसु शुक्ल एकादशी 8 मार्च	पुष्य शुक्ल द्वादशी 9 मार्च	आश्लेषा शुक्ल त्रयोदशी 10 मार्च	मघा शुक्ल चतुर्दशी 11 मार्च	पू॰ फाल्गुनी शुक्ल पूर्णिमा 12 मार्च

Rishi Dayanand - His Life And Work
-His Early Life-

-Saroj A rya, Delhi

The evening set in, Mool Shankar reluctantly followed his father to a large Shaiva temple outside the village where the devotees of Shiva were to assemble and keep awake themselves the whole night, as otherwise their fasts, it was believed, would bear no result. Worshipers and priests were pouring in and when the temple had enough people prayers began. Mool was struck with enthusiasm and devotion of all present. The prayer-hall began to resound with the chanting of sonorous hymns. There was not a soul who did not feel the thrill at the occasion. But as the night advanced, drowsiness and listlessness began to prevail, the animation in the proceedings vanished, and one man after another, after vainly battling with sleep, stretched themeselves on the floor. Mool Shankar's father was one of the foremost. The priests also followed. The young boy was both surprised and pained to see what scant value the worshipers seemed to put on the fast. He himself was bent upon keeping awake. Why should he lose the prize which his elders had wantonly forfeited? He wanted to know truth about all these religious practices so that he can be benefitted from these things if they are real.

Deep silence prevailed in the temple. The young lad was again and again washing his eyes with water to banish sleep. His attention was all of a sudden diverted towards the idol. What did he see? A Mouse creeping out of its hole was taking liberties with the idol of Shiva and was enjoying itself to the good things which had been offered by the devotees. The pranks of the little creature aroused serious questions in Mool Shankar's mind. Curiosity is the path and truth is the destination. Many a man had seen an apple fall, it was Newton in whose mind the question arose: 'Why does it fall to the ground? Why it didn't go up in the sky?' An assiduous and patient search led him to the required answer: Law of Graviton. Many had been to the temple of Shiva year after year, it was Mool Shankar who, seeing a mouse running over the idol and eating the offerings, asked, "Can this image be of the all-powerful God?" Rationality began to enter in the field of spirituality which was forbidden at that time.

Thoughts upon thoughts crowded in his mind. "Can this idol I see before me be the deity, which according to Puranas (mythological books which have many irrational stories about imaginary gods and goddesses) holds a trident in his hand, be-strides a bull, plays upon the dumroo, showers boon on one and pronounces a curse on another, and destroys the universe at his sweet will, in the end. It has not the power to hunt away a petty mouse from its presence. How can it be a deity? What is reality?"

Couldn't suppress these questions and finding himself baffled, the young lad awakened his father and asked him to explain whether this idol of Shiva was the same as Mahadeva (God of gods), the all-powerful and omni-present being who rules the universe. Karsan Tiwari woke up and demanded in an angry tone.

To be continue...

कैथल में 28 जनवरी को कैथल जनपद की आर्यसद की बैठक हुई जिसमें लगभग 350 आर्य, आर्याओं ने भाग लिया। आचार्य परमदेव मीमांसक जी ने आर्यसद की बैठक को सम्बोधित किया व उनके सानिध्य में निम्न पदाधिकारियों का चयन किया गया।

आर्यसद प्रमुख- जसबीर आर्य, **आर्यसद उप प्रमुख**- रणधीर आर्य

इनके अतिरिक्त विभिन्न सभाओं के अधिकारियों का चयन किया गया जो इस प्रकार है-

आर्य संरक्षिणी सभा (जनपद कैथल) करनैल आर्य- **अध्यक्ष**, बाबूराम आर्य- **उपाध्यक्ष**, जगमाल आर्य- **मंत्री**, राजेश आर्य- **उपमंत्री**, जरनैल आर्य- **कोषाध्यक्ष**।

राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा (जनपद कैथल) लाभ आर्य- **अध्यक्ष**, विक्रान्त आर्य- **उपाध्यक्ष**, ईश्वर आर्य- **उपाध्यक्ष**, श्रवण आर्य- **मंत्री**, सोनू आर्य- **कोषाध्यक्ष**।

राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा (जनपद कैथल) संदीप आर्य - **अध्यक्ष**, रोहित आर्य - **मन्त्री**, गुरजन्त आर्य - **कोषाध्यक्ष**।

सरपंच बलकार आर्य के मार्गदर्शन में **राष्ट्रीय गोकृष्यादि सभा** के अर्न्तगत एक गौशाला के निर्माण का भी निर्णय लिया गया।

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा की देन

आर्य निर्मात्री सभा का पहला दो दिवसीय आर्य प्रशिक्षण सत्र श्री बाल किशन आर्य जी के माध्यम से 10/10/2010 को आर्यसमाज शिवाजी कॉलोनी रोहतक में करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उस समय मैं आर्यसमाज नाँगलोई का कोषाध्यक्ष था। वैसे तो मेरा परिवार बहुत वर्षों से आर्यसमाज से जुड़ा था और मैं भी श्री यज्ञशरण कुलश्रेष्ठ जी व आर्य अमर सैनी जी के सम्पर्क में आने से आर्यसमाज में आया। आर्यसमाज में आने के बाद अनेकों आर्य विद्वानों के सम्पर्क में आया व आर्य समाज की गतिविधियों में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। परन्तु बहुत वर्षों से मन में एक पीड़ा रहती थी कि आर्यसमाज में युवा वर्ग का भाग लेना लगभग बंद सा हो गया है, इसी उधेड़बुन में वर्षों तक रहा। परन्तु जब आचार्य जितेंद्र जी द्वारा आर्य निर्माण सत्र में बड़े ही सरल, तर्क व प्रमाण से हम सभी युवाओं को वेदविद्या के सिद्धान्त समझाये, तब मुझे पता चला कि आर्य सिद्धान्त क्या होते हैं, अन्यथा तो अभी तक तो मैं बड़े भ्रम में ही था। इस सत्र के बाद मेरे मन में एक दृढ़ विश्वास पैदा हुआ कि इस सत्र के माध्यम से देश के करोड़ों युवाओं को आर्यसमाज में लाया जा सकता है। उनको वेदों व श्रीराम, श्रीकृष्ण के प्राचीन सार्वभौमिक -सार्वकालिक सिद्धान्तों से जोड़ा जा सकता है। आधुनिक विद्या का पढ़ा हुआ एक युवक उन दो दिन का सत्र करके बहुत ही सरलता से वैदिक सिद्धान्तों को समझकर अपने आपको आर्यसमाज के लिए न्यौछावार कर देता है। सत्र की इस विशेष उपलब्धि को पाकर मैं धन्य हो गया। उसके बाद से लेकर आज तक नाँगलोई के आर्यों जैसे -आर्य रमेश रोहिल्ला जी, आर्य रमेशचन्द्र जी, आर्य किशनलाल जी, आर्य विजय शंकर जी, आर्य रामपाल जी, आर्य राजेश जी, आर्य कश्मीर जी, आर्य संजय जी आदि अनेकों आर्यो के साथ मिलकर राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आयोजित लगभग 25 दो दिवसीय सत्रों का आयोजन हम नाँगलोई में करवा चुके हैं जिनमें सैकड़ों युवाओं को निर्मात्री सभा के योग्य व अनुभवी आचार्यों से वेदविद्या दिलाकर आर्य बना चुके हैं। मैं आगे भी इसी प्रकार तन-मन-धन से आर्य निर्माण के इस पुण्य कार्य को करता रहूँगा। सत्र का ऐसा अद्भुत पाठ्यक्रम बनाने के लिए मैं आचार्य परमदेव मीमांसक जी को कोटि-कोटि नमन करता हूँ और आर्य निर्माण का यह प्रकल्प ही सम्पूर्ण समाज व राष्ट्र को उन्नत्ति के पथ ले जा सकता है।

-यशपाल आर्य, मंत्री (संगठन), आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली

इस राष्ट्र के सर्वमान्य स्वतन्त्रता सेनानी लाला लाजपत राय का जन्मदिवस आर्यसमाज सैक्टर 23-24, रोहिणी, दिल्ली के तत्वावधान में ऋषि दयानन्द पार्क सैक्टर 23 रोहिणी में 29 जनवरी को मनाया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता आचार्य अशोकपाल जी का ओजस्वी व्याख्यान सबको प्रेरणादायक सिद्ध हुआ जिसमें सबके लिए आह्वान था कि यदि हमने आर्य विद्या को फैलाकर ही राष्ट्र की युवा पीढ़ी को इन विपरीत परिस्थितियों में बचाया जा सकता है और राष्ट्र रक्षा भी इसी से संभव है। कार्यक्रम को इसके अतिरिक्त आचार्य हनुमत्प्रसाद जी ने भी संबोधित किया। आर्य प्रदीप जी ने लाला लाजपत राय जी का जीवन परिचय दिया। आचार्य लोकेन्द्र जी ने यज संपन्न कराया तथा आचार्य सतीश जी कार्यक्रम के संयोजक रहे। निर्मात्री सभा दिल्ली प्रांत के अध्यक्ष आर्य महेश जी द्वारा सबको धन्यवाद के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। क्षेत्र के अनेकों लोगों तथा आर्यों व आर्याओं की उपस्थिति इस अवसर पर रही। -आर्य प्रमोद, प्रचार मंत्री

पुरुषार्थ से ही प्रार्थना फलीभूत होती है

-आर्य महेश, भिवानी, हरियाणा

एक कारखाने में काम करने वाला कर्मी अपने स्वामी से बिना काम किए ही धन के लिए याचना करे तो क्या उसका स्वामी उसे धन देगा? मान लीजिए उसका स्वामी बहुत दयालु है और उसे पैसा दे भी दे। अगर वह यह क्रिया यदि बार-बार दोहराए तो हम उसे क्या कहेंगे? सम्भवत: सभी उसे एक स्वर में भिखारी कहेंगे। हम आर्यजन भी प्रतिदिन संध्या के मन्त्रों द्वारा सर्वज्ञ से श्रेष्ठ बुद्धि के लिए प्रर्थाना करते हैं। आर्य ही क्या, बहुधा ईश्वर को किसी भी रूप में मानने वाला व्यक्ति किसी न किसी वस्तु की याचना अवश्य करता है। कहीं हम सब भी तो भिखारी की श्रेणी में नहीं हैं जो बिना पुरुषार्थ श्रेष्ठ बुद्धि की कामना कर रहे हों।

सावधान! वह सर्वज्ञ नि:सन्देह दयालुओं से भी दयालु है परन्तु पूरा न्यायकारी भी है सो बिन पुरुषार्थ फल कादापि नहीं देगा। जरा विचारें! अगर किसान बिना बीज बोए फसल की कामना करे तो क्या वह पूरी होगी? अत: ध्यान करें कि जिन कारणों से बुद्धि श्रेष्ठ बनती है वो जब तक हम नहीं जानेंगे तब तक कार्यरूपी श्रेष्ठ या मेधा बुद्धि हमें नहीं मिलेगी और इन बुद्धियों से भ्रष्टाचार, व्याभिचार, चोरी, हत्या, छल, धोखा, ईर्ष्या-द्वेष आदि होते रहेंगे जिससे सारा संसार व हम स्वयं भी दु:खी पीड़ित होते रहेंगे।

फिर श्रेष्ठ बुद्धि के लिए क्या करें इसके उपाय पर विचार करते हैं। प्रथम तो हम बुद्धि को ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से श्रेष्ठतम खुराक जैसे अच्छे दृश्य, शब्द, गंध, रस व स्पर्श दें। दूसरा-इसे बीमार करने वाले कारणों जैसे गन्दे व अश्लील दृश्य, गन्दे शब्द (फिल्मी गाने व अवैदिक गीत-संगीत) तीक्ष्ण रस, मादक गंध, कामुक स्पर्श आदि से बचाएँ व इस सबके साथ-साथ अपने-आपको व आने वाली पीढ़ियों को विवेकशील बनाने हेतु निरन्तर उपासना, स्वाध्याय, सद्विचार सुनने-सुनाने, सत्संग व आप्त पुरूषों का सानिध्य प्राप्त करने आदि कार्यों के लिए सदैव प्रयत्नशील रहें।

उपरोक्त विवेचन का सार यही है कि किसी द्रव्य या वस्तु की प्राप्ति के लिए प्रथम हम आवश्यक पुरूषार्थ करें फिर ईश्वर से याचना करें, भिखारी न बनें तभी हमारी प्रार्थना फलीभूत होगी क्योकि ईश्वर केवल किए हुए का फल देता हैं भीख नहीं। मात्र यही उपाय है मेधा बुद्धि प्राप्त करने का और अपराधी होने से बचने का। वस्तुत: कर्मेन्द्रियाँ तो मात्र साधन हैं अपराध तो बुद्धि से होते हैं। आओं हम सब मिलकर श्रेष्ठ बुद्धि हेतु पुरूषार्थ करें व ईश्वर से प्रार्थना करें।

आओ यज्ञ करें!

पूर्णिमा	10 फरवरी	दिन-शुक्रवार	मास-माघ	ऋतु-शिशिर	नक्षत्र-पुष्य
अमावस्या	26 फरवरी	दिन-रविवार	मास-फाल्गुन	ऋतु-वसंत	नक्षत्र-शतभिषा
पूर्णिमा	12 मार्च	दिन-रविवार	मास-फाल्गुन	ऋतु-वसंत	नक्षत्र-पू. फाल्गुनी
अमावस्या	28 मार्च	दिन-मंगलवार	मास-चैत्र	ऋतु-वसंत	नक्षत्र-उ. भाद्रपद

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

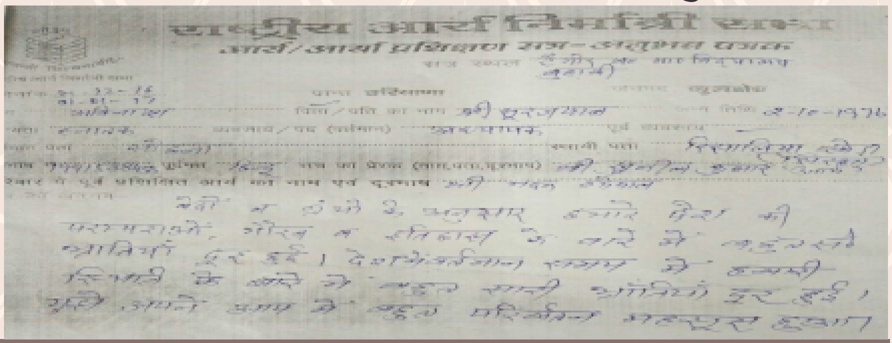
राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा
आर्य/आर्या प्रशिक्षण सत्र–अनुभव पत्रक

वेदों व ग्रन्थों के अनुसार हमारे देश की परम्पराओं, गौरव व इतिहास के बारे में बहुत सी भ्रान्तियाँ दूर हूई। देश में वर्तमान समय में हमारी स्थिति के बारे में बहुत सारी भ्रान्तियाँ दूर हूई। मुझे अपने आप में बहुत परिवर्तन महसूस हुआ।

नाम: अविनाश, आयु : 41 वर्ष, योग्यता: अध्यापक
पता: रिसालिया खेड़ा, सिरसा, हरियाणा

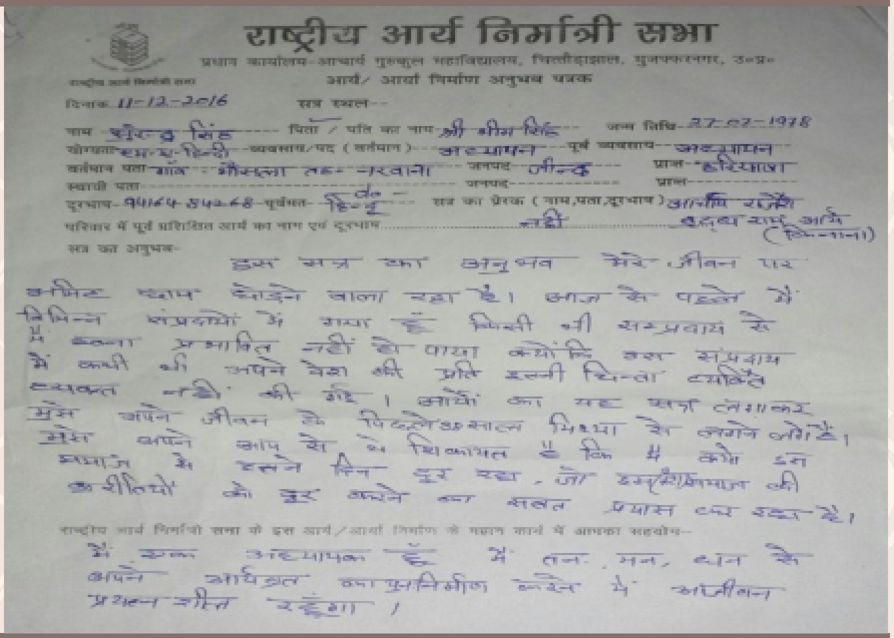
राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा
आर्य/ आर्या निर्माण अनुभव पत्रक

इस सत्र का अनुभव मेरे जीवन पर अमिट छाप छोड़ने वाला है। आज से पहले मैं विभिन्न संम्प्रदायों में गया हूँ किसी भी सम्प्रदाय से मैं इतना प्रभावित नहीं हो पाया क्योंकि किसी सम्प्रदाय में कभी भी अपने देश के प्रति इतनी चिन्ता व्यक्त नहीं की गई। आर्यों का यह सत्र लगाकर मुझे अपने जीवन के पिछले 38 वर्ष मिथ्या से लगने लगे हैं। मुझे अपने आप से ये शिकायत है कि मैं क्यों इस समाज से इतने दिन दूर रहा, जो इस देश, समाज की कुरितियों को दूर करने का सतत् प्रयास कर रहा है।

मैं एक अध्यापक हूँ, मैं तन-मन-धन से अपने आर्यावर्त का पुन:निर्माण करने में आजीवन प्रयत्नशील रहूँगा।

नाम: सुरेन्द्र सिंह, आयु: 36 वर्ष, योग्यता : एम. ए. (अध्यापक)
निवासी: गाँव भौंसला, तह. नरवाना, जीन्द, हरियाणा

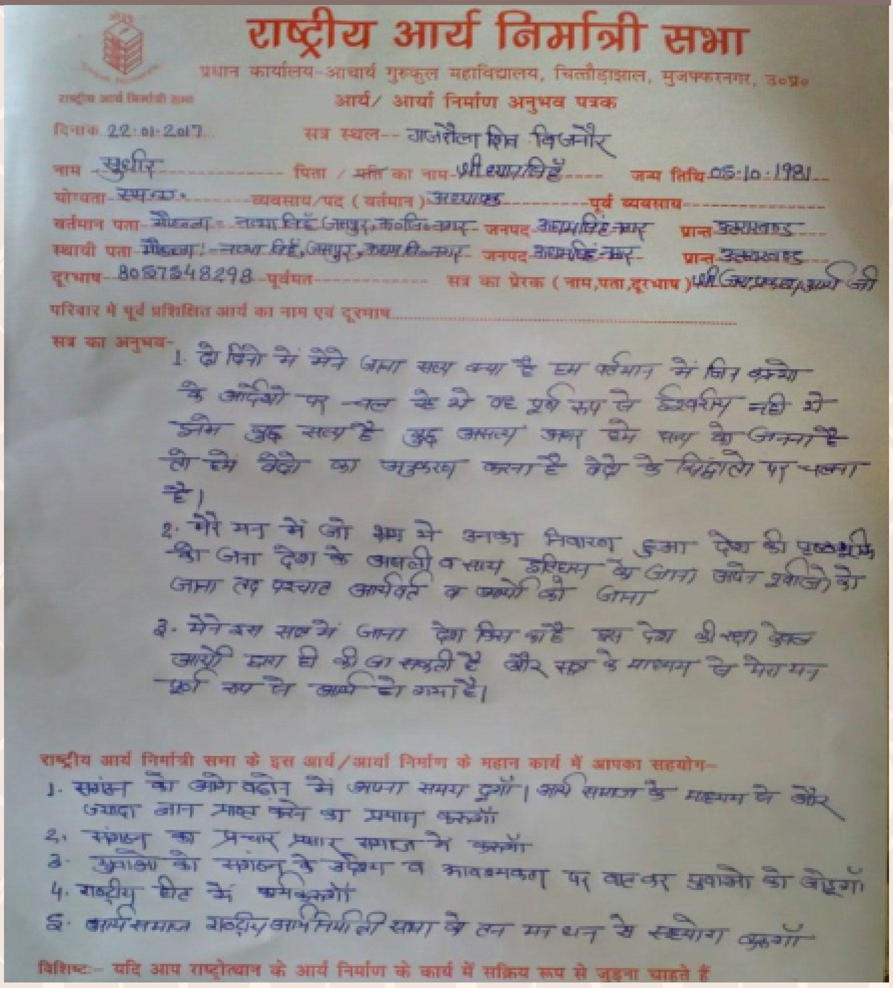
राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा
आर्य/ आर्या निर्माण अनुभव पत्रक

दो दिनों में मैंने जाना सत्य क्या है हम वर्तमान में जिन ग्रन्थों के आदर्शो पर चल रहे थे वह पूर्ण रूप से ईश्वरीय ज्ञान नहीं थे, इनमें से कुछ सत्य हैं, कुछ असत्य। अगर हमें सत्य को जानना है तो वेदों का अनुकरण करना है वेदों के सिद्धान्तों पर चलना है।

मेरे मन जो भ्रम थे उनका निवारण हुआ। देश की पृष्ठभूमि को जाना, देश के असली व सत्य इतिहास को जाना, अपने पूर्वजों को जाना, तत्पश्चात् आर्यावर्त व आर्यों को जाना।

मैंने इस सत्र में जाना कि देश किस का है इस देश की रक्षा केवल आर्यों द्वारा ही की जा सकती है। और सत्र के माध्यम से मेरा मन पूर्ण रूप से आर्य हो गया है।

मैं संगठन को आगे बढ़ाने में अपना समय दूंगा। आर्यसमाज के माध्यम से और ज्यादा ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास करूंगा।

संगठन का प्रचार-प्रसार समाज में करूंगा। युवाओं से संगठन के उद्देश्य व आवश्यकता पर बात कर युवाओं को जोडूंगा और राष्ट्रहित में कार्य करूंगा। आर्यसमाज, राष्ट्रीय निर्मात्री सभा को तन-मन-धन से सहयोग करूंगा।

नाम : सुधीर, आयु : 35 वर्ष, योग्यता : एम.ए. (अध्यापक)
पता : जसपुर, उधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड

संध्या काल

फाल्गुन मास, वसंत ऋतु, कलि-5117, वि. 2073
(11 फरवरी 2017 से 12 मार्च 2017)
प्रात: काल: 6 बजकर 15 मिनट से (6.15 A.M.)
सांय काल: 6 बजकर 30 मिनट से (6.30 P.M.)

चैत्र मास, वसंत ऋतु, कलि-5117-8, वि. 2073-4
(13 मार्च 2017 से 11 अप्रैल 2017)
प्रात: काल: 6 बजकर 15 मिनट से (6.15 A.M.)
सांय काल: 6 बजकर 30 मिनट से (6.30 P.M.)

आर्य प्रचारक कक्षा में प्रचारकों के साथ आचार्य सतीश जी
आर्य गुरुकुल महाविद्यालय, दिल्ली

आर्य प्रचारक कक्षा में प्रचारकों के साथ आचार्य धर्मपाल जी
आर्य गुरुकुल महाविद्यालय, करनाल

मदर टेरेसा स्कूल, नोएडा में वसंत पंचमी के दिन हजारों छात्र-छात्राओं को वैदिक सिद्धान्तों से अवगत कराते आचार्य राजेश जी

आर्य निर्माणशाला में आर्य निर्माण

स्वामी व प्रकाशक आचार्य परमदेव मीमांसक द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित एवं सुदर्शन प्रेस, दिल्ली-87 से मुद्रित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।